AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E): 2583:1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 02| March 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 13-17

स्वच्छता अभियान और पर्यावरण- एक परिचयात्मक परिदृश्य

मोहन सिंह
समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छता अभियान और पर्यावरण की व्यापक रूप से संरचनात्मक चर्चा की गयी। इसके अन्तर्गत स्वच्छता सम्बन्धी प्रकायों, संसाधनों, कार्यप्रणालियों, आदतों, उद्देश्यों आदि का वर्णन किया गया है। स्वच्छता के सम्बन्ध में जनसामान्य की जागरूकता व प्रतिक्रिया को बताने का प्रयास किया गया है। स्वच्छता अभियान अखिल भारतीय स्तर का अभियान है, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण भारत को खुले में शौच से मुक्त करना व भारतीयों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है। यह पर्यावरण में किस तरह सकारात्मक व नकारात्मक सिद्ध होगा, यह जानने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों का संग्रहण द्वितीयक स्रोतों (पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, सोशल मीडिया, इण्टरनेट) के माध्यम से किया गया है। इसमें स्वच्छता व पर्यावरण सम्बन्धी तथ्यों का वर्णित किया गया है और इसे आमजन से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द: स्वच्छता, कार्यप्रणाली, संसाधन, अपशिष्ट।

प्रस्तावना:

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया राष्ट्र स्तर का एक अभियान है, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण भारत की गलियों, सड़कों तथा सम्पूर्ण अधिसंरचना को साफ-सुथरा करना है। इस अभियान को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं पुण्यतिथि 02 अक्टूबर 2014 को आरम्भ किया गया था। महात्मा गांधी ने देश को दासता से मुक्त कराया, लेकिन भारत को स्वच्छ बनाने का सपना पूरा नहीं कर सके।

स्वच्छता और पर्यावरण: स्वच्छ भारत अभियान के कारण भू-जल के दूषित होने में कमी आयी है, जिसमें स्वच्छता भू-जल, मिट्टी और वायु सहित पर्यावरण के सभी पहलुआ और साथ ही ओ0डी0एफ0 क्षेत्रो में रहने वाले समुदायों के स्वास्थ और कल्याण को प्रभावित करती है।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Mr. Mohan Singh Dept. of Sociology Lucknow University, Lucknow, U.P. Email:anilk6867@gmail.com	

स्वच्छता और उसके उद्देश्य: पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु स्वच्छता के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों को शामिल किया गया है, जो निम्नलिखित हैं:-

- स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक गाव, गली, सड़क, मोहल्ले, स्कूल, कालेज, सार्वजनिक स्थान, रेल व बस को साफ-सुथरा करना है।
- प्रत्येक गाव के प्रत्येक घरों में शौचालय का निर्माण करना, जिससे लोग खुले में शौंच करने से बच सकें।
- नगर निगम की भागीदारी देश के लिए बढ़ाना।
- गाव में स्वच्छता के लिए नागरिकों में जागरूकता फैलाना, नागरिकों को उसके कर्तव्य का एहसान कराना व देश को स्वच्छता व निर्मलता से सशक्त बनाना।
- गाव व शहरों में प्रत्येक स्थान पर कूड़ेदान की व्यवस्था करना।
- सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण करवाना व शौचालय में नियमित रूप से सफाई कराना।
- अपशिष्ट पदार्थों के समापन हेतु उचित विधि अपनाना व जहरीले पदार्थों के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगाना।
- नदियों, नालों व पाइप लाइनों की नियमित रूप से सफाई करवाना तथा टूटी पाइप लाइनों व नालियों की मरम्मत करवाना।
- लापरवाही को जागरूकता में बदलना व ज्ञान के माध्यम से विवेक को प्राप्त करना।
- पर्यावरण व प्रकृति की सम्पदा की रक्षा करना, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके देश की प्रतिष्ठा का विकास करना।
- गलत मानसिकता का पतन करके शिक्षा से देश की सम्पदा का महत्व बताना।
- प्रदूषण की रोकथाम करना, पेड़ लगाना व भारत देश को गंदगी मुक्त करना।

साफ-सफाई हेतु सरकार और आम जनता की पहल:

साफ-सफाई हेतु राज्य सरकारों ने विशेष ध्यान दिया है, जिसमें विभिन्न मुद्दों के लिए आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रम व कार्यनीति बनाई गई है, मिशन को पूरा करने के लिए संकेन्द्रित कार्यक्रम के जरिये राज्य सरकारों के प्रयासों में भारत सरकार की अहम भूमिका है:-

कार्यनीति के तत्व:

- जमीनी स्तर पर गहन व्यवहारगत परिवर्तन गतिविधियां चलाने के लिए जिलों की संस्थागत क्षमता को बढ़ाना।
- कार्यक्रम को समयबद्ध तरीके से चलाने और परिणामों को सामूहिक रूप से मापने के लिए कार्यान्वयन एजेन्सियों की क्षमताओं को सुदृढ़ करना।
- समुदायों में व्यवहारगत परिवर्तन गतिविधियों के कार्यान्वयन हेतु राज्य स्तर की संस्थाओं के कार्य निष्पादन को प्रोत्साहन देना।

सामाजिक व्यवहार पर परिवर्तन हेतु प्रयास:

स्वच्छ भारत मिशन को भिन्न करने वाला कारक व्यवहारगत परिवर्तन है और इसलिए व्यवहारगत परिवर्तन संवाद पर अत्याधिक बल दिया जा रहा है। जागरूकता सृजन, लोगों की मानसिकता को प्रेरित कर समुदाय में व्यवहारगत परिवर्तन लाने और घरों, स्कूलों, आंगनबाड़ियों, सामुदायिक समूहों के स्थलों में स्वच्छता की सुविधाओं की मांग सृजित करने तथा ठोस एवं तरल अपशिष्ट पदार्थ

प्रबन्धन गतिविधियों पर बल दिया जा रहा है। गाव के अधिकांश घरों या वांछित व्यवहार अपनाने और खुले में शौच से मुक्त की अपील अभियान के माध्यम की गई है। इसका वर्तमान परिणाम यह है कि खुले में शौच में कमी आई है और स्वच्छ पर्यावरण का स्तर बढ़ गया है।

नगर निगम द्वारा ठोस कचरे का निपटान:

- घरो, झुग्गियों, बाजारों, अस्पतालों आदि से कचरा इकट्ठा करना।
- **वर्गीकरण :**

  कचरे को जैविक और अजैविक रूप में वर्गीकृत करना।
- **भण्डारण :**

  वर्गीकृत कचर को अच्छी तरह रखें, जिससे उनमें किसी तरह की गंदगी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक विषाणु न फैल।
- **परिवहन:**

  कचरा ढोने वाले वाहन को ठीक ढंग से ढका जाये जिससे वह बिखरे नहीं।
- **प्रसंस्करण:**

  जैविक कचरा, कम्पोस्ट और वर्गी कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए अजैविक | कचरा बचायी जा सकने योग्य सामग्री का पुनरावर्तन।

दैनिक जीवन में स्वच्छता:-

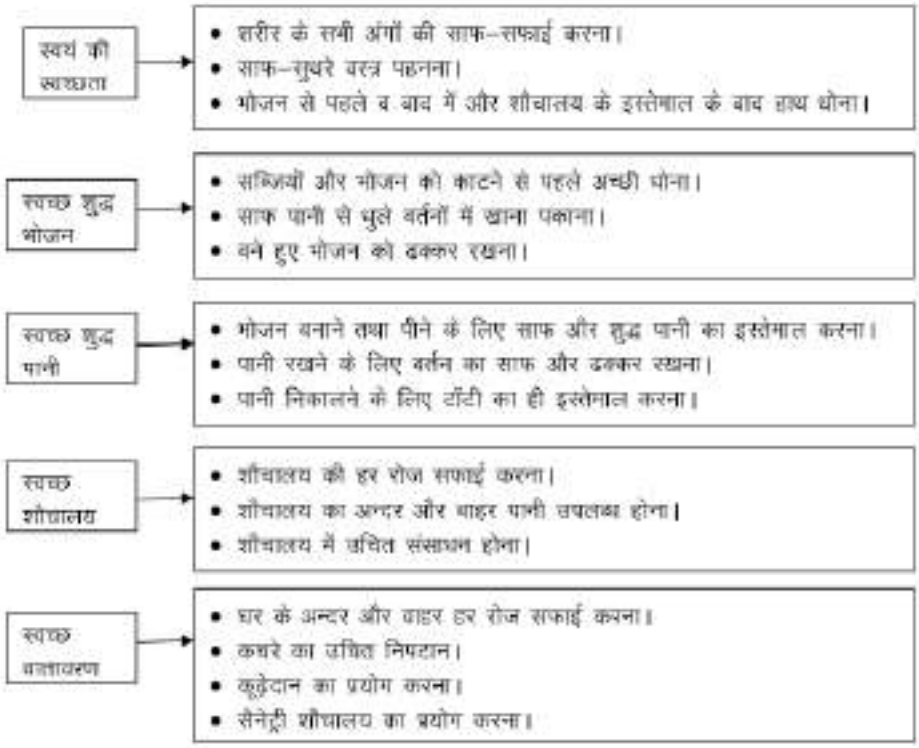

पर्यावरणीय समस्यायें:

पर्यावरण प्रदूषण के साथ ही आवास, रहन-सहन, सांस्कृतिक, भौतिक, आर्थिक दशायें भी प्रभावित होती हैं, जो मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। विभिन्न नगरों में भिन्न-भिन्न क्रिया-कलापों से यह स्थिति उत्पन्न होती है, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं:

- औद्योगिकरण से उत्पन्न समस्यायें।
- बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्यायें।
- नगरीकरण के अतिभार से उत्पन्न समस्यायें।
- ऊर्जा संकट से उत्पन्न समस्यायें।
- तकनीकि प्रयोग से उत्पन्न समस्यायें।
- वाहनों के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न समस्यायें।
- घरेलू अपशिष्टों से उत्पन्न समस्यायें।
- विभिन्न सार्वजनिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों से उत्पन्न समस्यायें।

उपरोक्त सभी कारकों के कारण विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न होती हैं। शहरों में लगातार औद्योगिकरण की होड़ लगी हुई है, जिसके कारण संसाधनों का अत्यधिक विदोहन हो रहा है, जिससे प्राकृतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इसी प्रकार नगरीकरण के कारण कृषि भूमि संकुचित होती जा रही है एवं नदियां छोटी होती जा रही हैं। साथ ही विभिन्न प्रकार के अवसाद एवं अपशिष्टों के कारण पर्यावरण अवनयन की दशा उत्पन्न होती जा रही है। पर्यावरण प्रदूषण में वाहनों का अत्यधिक प्रयोग, कृषि भूमि में रसायनों का प्रयोग, घरेलू अपशिष्ट, बढ़ती जनसंख्या आदि के कारण भी प्राकृतिक संकट की दशा उत्पन्न हो रही है। इस प्रकार कई ऐसे कारक हैं जो पर्यावरण की गुणवत्ता को कम करते जा रहे हैं।

वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियाँ:

जनसंख्या वृद्धि आज देश की सबसे बड़ी चुनौती है, जो वर्तमान में 121 करोड़ से भी अधिक हो गई है। प्राप्त संसाधनों की कमी से उत्पन्न समस्याओं जैसे-भोजन, पानी, ईंधन की कमी तथा सामाजिक समस्याओं जैसे-अपराध, भुखमरी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य समस्याओं आदि का बढ़ना। परिवार कल्याण मंत्रालय की 1992 की रिपोर्ट से यह बात सामने आई कि 2025 तक भारत चीन को पीछे छोड़कर संसार का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र बन जायेगा।

सुझाव:

- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाये।
- वनों और जंगलों का वृक्षारोपण करके किया जाये और वन प्रबन्धन को बढ़ावा दिया जाये।
- महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में 'पर्यावरण अध्ययन' एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाये।
- पर्यावरण अधिनियम व सम्बन्धित अन्य अधिनियमों का कड़ाई से पालन कराया जाये।
- व्यक्तियों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच में परिवर्तन लाये जायें और जागरूक किया जाये।
- पशुपालन को प्रोत्साहन एवं जैविक खाद का उपयोग कृषि हेतु किया जाये।
- वाहनों को प्रदूषण मुक्त कर और ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा का उपयोग यथासंभव किया जाये।
- बच्चों में पर्यावरणीय स्वच्छता हेतु जागरूकता अभियान चलाया जाये।

- अपशिष्ट पदार्थों के दोहन हेतु प्रबंधन किया जाये।
- सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से पर्यावरण व स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया जाये।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त शोध लेख के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वच्छता और पर्यावरण सम्पूर्ण भारत के लिए एक जन जागरूक कार्यक्रम है, लेकिन यह तभी संभव है जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति इसके प्रति जागरूक हो और अपनी आदतों में परिवर्तन ला सके। आज पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की गंभीर समस्यायें जन्म ले रही हैं। जिसका योगदान व्यक्तियों का ही है। यदि समय पहले इसका निस्तारण नहीं किया गया तो जीव-जन्तुओं, वनास्पतियों एवं मानव के अस्तित्व पर विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा। पर्यावरण को स्वच्छ, शुद्ध एवं सुरक्षित रखने की नैतिक जिम्मेदारी आमजन की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. 'स्वच्छ भारत-पत्रिका : राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास , संस्थान, नई दिल्ली-2017
2. शाक्य, सुधा : ''वर्तमान पर्यावरणीय समस्यायें एवं सुझाव -शोध पत्रिका- इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, सितम्बर 2015
3. कठेरिया, धर्मेश-कठेरिया शिवांजी: ''पर्यावरण जागरूकता- स्वच्छ भारत अभियान और गांधीवादी दृष्टिकोण'- शोध पत्रिका- ''मीडिया मीमांसा- अप्रैल-जून 2016
4. कुमार, शिव-कुमार डॉ. हरीश : पर्यावरण संरक्षण जागरूकता में प्रिन्टमीडिया की भूमिका-शोध पत्रिका एन इन्ट्रोडक्शन मल्टीडिसपिलनरी रिसर्च जर्नल-अप्रैल-जून, 2016
5. मीणा, बन्टेश कुमार: ''पर्यावरण प्रदूषण का जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव'-शोध प्रबन्ध, कोटा विश्वविद्यालय कोटा-2018
6. दैनिक समाचार-पत्र: (25 जुलाई, 2 अगस्त 2015) जबलपुर, म0प्र0।
7. www.hindu-indiawaterportal.org
8. www.govtoindia.com

■ ■ ■